International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(3): 409-411

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(3): 409-411
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 09-03-2017
Accepted: 10-04-2017

श्रीमती स्मृति
विभाग, पौड़ी परिसर
हे० न० ब० ग० विश्वविद्यालय,
श्रीनगर गढ़वाल

डॉ कुसुम डोबरियाल संस्कृत
विभाग, पौड़ी परिसर
हे० न० ब० ग० विश्वविद्यालय,
श्रीनगर गढ़वाल

Correspondence
श्रीमती स्मृति
विभाग, पौड़ी परिसर
हे० न० ब० ग० विश्वविद्यालय,
श्रीनगर गढ़वाल

महाभारत में प्रतिपादित मोक्ष का स्वरूप

श्रीमती स्मृति, डॉ कुसुम डोबरियाल

सारांश
भारतीय धर्मशास्त्र में मानव–जीवन के चार पुरूषार्थ विवेचित हैं– धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष। धर्म, अर्थ, तथा काम भौतिक पुरूषार्थ हैं और मोक्ष आध्यात्मिक पुरूषार्थ है। धर्म–अर्थ–काम व्यक्ति को सांसारिकता की ओर प्रवृत करते हैं और मोक्ष व्यक्ति को सांसारिकता से निवृत्त करता है। संसार आवागमन, जन्म–मरण और नश्वरता का केन्द्र है। ज्ञान के अभाव के कारण मानव इस संसार के चक्र में फंसा रहता है और जन्म–मरण के चक्रव्यूह से मुक्त नहीं हो पाता जिस कारण उसे नाना प्रकार के कष्टों का अनुभव करना पड़ता है, इन कष्टों से आत्यन्तिक मुक्ति पाना ही मोक्ष है।
मोक्ष की अवधारणा हमारे वेद, दर्शन, ऐतिहासिक ग्रन्थ, साहित्य, आदि सभी विधाओं में प्राप्त होती है। महाभारत में भी मोक्ष तत्त्व का सविस्तार वर्णन है। महाभारतीय मुक्ति जीव (पुरूष) द्वारा अहं त्याग और नारायण में अवस्थित हो जाने पर या स्वयं को परब्रह्म सदृश्य समझने पर ही सम्भव है। शान्तिपर्व के अनुसार आत्मज्ञान ही एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा व्यक्ति का सांसारिक वस्तुओं के प्रति मोह समाप्त हो जाता है और वह सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर , जगत् को मिथ्या समझकर, परमात्मा में लीन होने लगता है, इस प्रकार 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' की अनुभूति ही मोक्ष है।

कुट शब्दः धर्म, मोक्ष, महाभारत, आध्यात्मिक, पुरूषार्थ, श्रीमद्भगवद्गीता, त्रिवर्ग, ज्ञान, आधारभूत, चिन्तन, सांसारिकता, भारतीय, आत्मज्ञान, बन्ध।

प्रस्तावना
मानव–जीवन की सार्थकता जिस गन्तव्य स्थान पर पहुँच कर चिर शान्ति को प्राप्त करता है, वही 'मोक्ष' है। मोक्ष भारतीय धर्म का आधारभूत एवं सर्वमान्य प्रत्यय है। मोक्ष का चिन्तन भारतीय संस्कृति के समस्त शास्त्रों के मूल में रहा है। भारतीय धर्मशास्त्र में मानव–जीवन के चार पुरूषार्थ विवेचित हैं– धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष। धर्म, अर्थ, तथा काम भौतिक पुरूषार्थ हैं और मोक्ष आध्यात्मिक पुरूषार्थ है। धर्म–अर्थ–काम व्यक्ति को सांसारिकता की ओर प्रवृत करते हैं और मोक्ष व्यक्ति को सांसारिकता से निवृत्त करता है। वास्तव में त्रिवर्ग मोक्षरूप साध्य का साधन है। त्रिवर्ग की धारणा इहलौकिक जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं एवं रूचियों से सम्बन्ध रखती है जबकि मोक्ष पारलौकिक जीवन की राह पर अग्रसर व्यक्ति को आध्यात्म केन्द्रित सुख में निमग्न कर देने वाली तैयारी का नाम है।
मोक्ष का अर्थ है– 'मुच्यते सर्वैदुःखबन्धनैर्यत्र सः मोक्षः'। अर्थात् जिस पद को पाकर जीव आध्यात्मिक आदि सम्पूर्ण दुःखबन्धनों से मुक्त हो जाता है, उसे 'मोक्ष' कहते हैं, इसीलिए इसको मुक्ति भी कहते हैं। मुक्ति शब्द भी 'मुच्लृ मोचने' धातु से 'क्तिन्' प्रत्यय के योग से निष्पन्न हुआ है। इसका अर्थ है– बन्धनों से छूट जाना। इस बन्ध से छूटने का नाम ही मुक्ति, मोक्ष, अपवर्ग, निर्वाण और कैवल्य आदि है। शब्दकल्पद्रुम[1] के अनुसार मोक्ष शब्द का निर्वचन है मोक्ष्यतेदुःखमनेन अर्थात् जिसके द्वारा दुःख से छुटकारा पाया जाता है।
''मोनियर विलियम्स के अनुसार मोक्ष का अभिप्राय है– सांसारिक सत्ता (आवागमन) से मुक्ति होना अथवा अंतिम रूप से मुक्ति।''
"Release from worldly existence or transmigration, final or eterenal emancipation."[2]
सम्पूर्ण भारतीय वाड्मय में मोक्ष को ही जीवन का अन्तिम उद्देश्य बताया गया है, क्योंकि मोक्ष प्राप्त किये बिना जीव के दुःख–परम्परा रूप सम्पूर्ण अनर्थों की निवृत्ति नहीं हो सकती है। इसीलिए मोक्ष को परम पुरूषार्थ भी कहते हैं। यह पुरूषार्थ ही मनुष्य को शिक्षा देता है कि सांसारिक सुखानुभूति क्षणिक है, क्योंकि सुख पाने पर व्यक्ति और अधिक सुख पाने की लालसा करता है, और सुखप्राप्ति में विघ्न होने पर दुःख ही प्राप्त करता है। इसीलिए मोक्ष को आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक–त्रिविध दुःखों का विनाशक माना है।

जब मनुष्य को ज्ञान हो जाता है कि वास्तविक सुख सांसारिक सुख नहीं है, अपितु वास्तविक सुख मोक्ष–प्राप्ति है तब वह मोक्ष प्राप्ति की ओर उन्मुख हो जाता है और मोक्ष–प्राप्ति के अनन्तर संसार के जन्म–मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है।

मोक्ष की अवधारणा हमारे वेद, दर्शन, ऐतिहासिक ग्रन्थ, साहित्य, आदि सभी विधाओं में प्राप्त होती है। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में भी मानव को संसाररूपी भवसागर से पार कराने के लिए अर्थात् मोक्ष प्राप्ति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गई है। 'ऋग्वेद'[3] में ईश्वर से सांसारिक बन्धनों से छूटने हेतु प्रार्थना की गई है। 'उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्'। अर्थात् जिस प्रकार एक ककड़ी या खरबूजा अपनी बेल में पक जाने के उपरान्त उस बेल–रूपी संसार के बन्धन से मुक्त हो जाती है, उसी प्रकार हम भी इस संसार–रूपी बेल में पक जाने के उपरान्त जन्म–मृत्यु के बन्धनों से सदा के लिए मुक्त हो जाएं।

विष्णुपुराण में कहा गया है कि–

इति संसार–दुःखार्क–ताप–तापित–चेतसाम्।
विमुक्ति–पादपच्छायामृते कुत्र सुखं नृणाम्।।[4]

अर्थात् सांसारिक दुःखरूपी प्रचण्ड सूर्य के ताप से जिनका अन्तःकरण सन्तप्त हो रहा है, उन पुरूषों को मोक्षरूपी कल्पवृक्ष की शीतल छाया को छोड़कर और कहाँ सुख मिल सकता है ? इस प्रकार मोक्ष ही समस्त पुरूषार्थों और समस्त सुखों का सम्राट है। मोक्ष के सम्बन्ध में बौद्ध दर्शन के अनुसार जहाँ 'आत्मोच्छेदो मोक्षः अर्थात् आत्मा का विनाश कर देना ही मोक्ष है, वहीं जैन दार्शनिक कहते हैं– 'सम्यग्दर्शनज्ञानचरित्राणि मोक्षमार्गः' अर्थात् सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान तथा सम्यक् चरित्र तीनों ही मोक्ष के साधन हैं। कठोनिषद् में ज्ञानेन्द्रियों तथा मन के आत्मा में लय हो जाने को मोक्ष कहा गया है–

यदा पंचावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह।
बुद्धिश्च न विचेष्टति तामाहुः परमांगतिम्।।[5]

संस्कृत वाङ्मय का सर्वाधिक विशालकाय ग्रन्थ महाभारत स्वयं में ज्ञान की सम्पूर्णता से पूरित है जिसके कारण कहा जाता है कि यह धर्मशास्त्र होने के साथ–साथ अर्थशास्त्र एवं मोक्षशास्त्र भी है।

धर्मशास्त्रमिदं पुण्यमर्थशास्त्रमिदं परम्
मोक्षशास्त्रमिदं प्रोक्तं व्यासेनामितबुद्धिना।[6]

महाभारत में मोक्ष–तत्त्व का सविस्तार वर्णन है। महाभारतीय मुक्ति जीव (पुरूष) द्वारा अहं त्याग और नारायण में अवस्थित हो जाने पर या स्वयं को परब्रह्म सदृश्य समझने पर ही सम्भव है। महाभारत में मोक्ष के तीन प्रमुख मार्ग प्रसिद्ध हैं। कर्मयोग, भक्तियोग, तथा ज्ञानयोग। इन तीनों ही मार्गों का विशद् विवेचन भीष्मपर्व के प्रमुख भाग श्रीमद्भगवद्गीता में किया गया है। भगवान् श्रीकृष्ण ने मोक्ष के सम्बन्ध में अपने विचार इस प्रकार प्रकट किये हैं।

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः।
छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः।।
कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम्।
अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम्।।
स्पर्शान् कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः।
प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ।।
यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिमोक्षपरायणः।
विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः।।[7]

अर्थात् पापरहित, द्वैधभाव से रहित, आत्मतत्त्व का चिन्तन करने वाले, सभी प्राणियों के हित में संलग्न ऋषि, परमब्रह्मरूपी निर्वाण को प्राप्त कर लेते हैं। कामक्रोधरहित, मन को वश में करने वाले, आत्मतत्त्व को जानने वाले ऋषियों को ब्रह्मनिर्वाण प्राप्त हो जाता है। बाह्यविषयों को छोड़कर, दृष्टि को बीच में स्थित करके, नासिका में विचरने वाले, प्राण और अपान वायु को सम करके, इन्द्रियों तथा मन–बुद्धि को जीतने वाले, इच्छा, भय और क्रोध से रहित, मोक्षपरायण मुनि मुक्त होता है।

भगवान् श्रीकृष्ण ने ज्ञानयोग और कर्मयोग का उपदेश देने के साथ–साथ उपदेश दिया है कि जो व्यक्ति भक्तियोग के द्वारा मेरी सेवा करता है, वह सत्त्व, रज और तम इन तीनों गुणों का अतिक्रमण करके ब्रह्मस्वरूप ही बन जाता है, अर्थात् मुक्त हो जाता है। श्रीकृष्ण के अनुसार भक्ति के साथ भगवच्छरणागति भी मोक्ष का साधन है। वे कहते हैं कि जो अपना सब–कुछ भगवान् को समर्पित कर देता है, वह मनुष्य सांसारिक बन्धनों से मुक्त हो जाता है, क्योंकि सांसारिक बन्ध ही मोक्ष प्राप्ति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है। इसीलिए व्यक्ति को अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए सब कर्मों को भगवदर्पण कर देना चाहिए और बाद में सभी धर्मों को त्याग कर ईश्वर का आश्रय लेना चाहिए।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।[8]

मोक्ष प्राप्ति के लिए मन की एकाग्रता भी आवश्यक है। क्योंकि एकाग्रता बिना आत्मसाक्षात्कार असम्भव है। किन्तु मानव मन बहुत चंचल होता है जिस पर नियन्त्रण पाना बहुत कठिन है। अतः भगवान् कृष्ण ने अभ्यास और वैराग्य द्वारा मन को वश में करने का उपदेश दिया है। इसीलिए ज्ञान द्वारा वैराग्य प्राप्त करना चाहिए। ज्ञान द्वारा जब व्यक्ति समझ लेता है कि सांसारिक सुख क्षणभंगुर हैं, तभी उनके प्रति विरक्त होता है, और तत्पश्चात् उसका सम्पूर्ण ध्यान मोक्ष पर ही हो जाता है। शान्तिपर्व के अनुसार आत्मज्ञान ही एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा जीव जन्म–मरण रूपी दुर्गम संसार–सागर से पार हो जाता है।

ज्ञानान्मोक्षो जायते[9]

इसीलिए मोक्ष प्राप्ति हेतु ज्ञान का सबसे अधिक महत्त्व बताया गया है। इसी से महाभारत में कहा है कि– जो मनुष्य बुद्धि से जीवों के आवागमन पर इस प्रकार शनैः शनैः विचार करके विशुद्ध एवं उत्तम आध्यात्मिक ज्ञान को प्राप्त कर लेता है, वह परम शान्ति को प्राप्त होता है।

एतां बुद्ध्वा नरः सर्वां भूतानामागतिम्।
अवेक्ष्य च शनैर्बुद्धया लभते शमनं ततः।[10]

श्वेतश्वतरोपनिषद् में भी ब्रह्मज्ञान को मोक्ष प्राप्ति का साधन बताते हुए कहा गया है–

सूक्ष्मातिसूक्ष्मं कलिलस्य मध्ये विश्वस्य सृष्टामनेकरूपम्।
विश्वस्यैकं परिवेष्टितारं ज्ञात्वा शिवं शान्तिमत्यन्तमेति।।[11]

अर्थात् सूक्ष्म से भी सूक्ष्म, अविद्या और उसके कार्यरूप दुर्गम स्थान में स्थित, जगत के रचयिता, अनेक रूप और संसार को एकमात्र भोग प्रदान करने वाले शिव को जानकर जीव परमशान्ति अर्थात् मोक्ष को प्राप्त करता है।

ज्ञान द्वारा ही मनुष्य के दुःखों का विनाश और मुक्ति–लाभ होता है। भीष्म पितामह कहते हैं कि जैसे मैले शरीर वाले मनुष्य निर्मल जल से भरी नदी में स्नान करके साफ–सुथरे हो जाते हैं, उसी प्रकार इस ज्ञानमयी नदी में अवगाहन करके मलिनचित्त मनुष्य भी अत्यन्त शुद्ध एवं ज्ञानसम्पन्न हो जाते हैं।

मलिनाः प्राप्नुयुः शुद्धिं यथा पूर्णां नदीं नराः।
अवगाह्य सुविद्वांसो विद्धि ज्ञानमिदं तथा।।[12]

मोक्ष की प्राप्ति मानव–जीवन का सर्वोच्च लाभ है, इसीलिए मनुष्य को संसार के सम्पूर्ण दुःखों से मुक्त होने के लिए सदैव प्रयत्नशील होना चाहिए। महाभारत में भीष्म पितामह बुद्धिमानों को सचेत करते हुए कहते हैं– यह सारा जगत् जन्म–मृत्यु, जरावस्था के दुःखों, व्याधियों और मानसिक व्यथाओं से घिरा हुआ है। अतः बुद्धिमान पुरूष को इनसे मुक्त होने के लिए अर्थात् मोक्ष के लिए सदा प्रयत्न करना चाहिए।[13] मोक्ष के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि जिस प्रकार सूर्य अपनी किरणों के द्वारा जगद् व्यापकत्व को प्राप्त करके अस्ताचल को जाते हुए अपनी किरणों को समेट लेने पर निर्गुण हो जाता है, उसी प्रकार इस संसार में जीव सुख–दुःख से निर्विशेष होकर गुणरहित, अव्ययब्रह्म में प्रवेश करता हुआ, अविनाशी परब्रह्म का दर्शन करके मोक्ष को प्राप्त करता है।[14]

जैसे नद और नदियाँ समुद्र में मिलकर अपने नाम और रूप को त्यागकर सागरजल में लीन हो जाती है तथा जिस प्रकार बड़े–बड़े नद छोटी–छोटी नदियों को अपने में विलीन कर लेते हैं, उसी प्रकार जीवात्मा परमात्मा में विलीन हो जाता है तथा मोक्ष को प्राप्त करता है।

यथार्णवता नद्यो व्यक्तीर्जहति नाम च।
नदाश्च स्वतां नियच्छन्ति तादृशः सत्वसंशयः।।[15]

इस प्रकार मोक्ष के सम्बन्ध में हमारे मनीषियों ने शरीरान्त होना, जन्म–मरण के चक्र से छुटकारा पाना, परमात्मस्वरूप का साक्षात्कार करना, इन्द्रियसंयम, काम–क्रोध, राग–द्वेष आदि को छोड़ना आदि को मोक्ष माना है। वस्तुतः मोक्ष पुरूषार्थ की कोटि में तब आता है, जब त्रिवर्ग के पश्चात् व्यक्ति सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर , जगत् को मिथ्या समझकर, परमाात्मा में लीन होने लगता है, इस प्रकार 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' की अनुभूति ही मोक्ष है।

वर्तमान युग में मोक्ष की महत्ता से सब परिचित है, संसार के दुःखमय स्वभाव को जानकर प्रत्येक मनुष्य इस आवागमन के चक्र से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त करना चाहता है। अतः महाभारत में प्रतिपादित मोक्ष के स्वरूप से स्पष्ट होता है कि मनुष्य को जब आत्मज्ञान हो जाता है, तब वह सांसारिक बन्धनों से मुक्त होता हुआ परमात्मा में विलीन होकर इस संसाररूपी भवसागर से पार हो जाता है अर्थात् वह जन्म–मृत्यु के प्रपंच से मुक्त हो जाता है।

सन्दर्भ सूची

1. शब्दकल्पद्रुम पृष्ठ सं0786
2. Monier Williams- Sanskrit English Dictionary, page no. 835
3. ऋग्वेद 7/59/12
4. विष्णुपुराण 6/5/57
5. कठोपनिषद 2/3/10
6. तत्त्वार्थसूत्र 1/1/1
7. श्रीमद्भगवद्गीता 5/24–28
8. वहीं 18/66
9. महाभारत, शान्तिपर्व 318/87
10. महाभारत, शान्तिपर्व 194/56
11. श्वेताश्वतरोपनिषद् 4/14
12. शान्तिपर्व 194/53
13. वहीं 215/2

14– वहीं 206/31

15–वहीं 219/42